विश्वविद्यालय में योग विभाग में तीन दिवसीय रेकी पर आधारित कार्यशाला

योग एवं रेकी से मानसिक एवं आध्यत्मिक स्वास्थ्य की प्राप्ति- डा० आशीष फड़के

योग एवं रेकी साधनाओं में घनिष्ट संबंध- डा०अरूण कुमार साव

योग एवं रेकी एक दूसरे की पूरक- प्रो जी०एस० गिरि

सागरः 30.06.2017- योग शिक्षा विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर द्वारा तीन दिवसीय रेकी पर आधारित कार्यशाला का आयोजन मुंबई के आयुर्वेदाचार्य एवं रेकीमास्टर डा० आशीष फड़के के निर्देशन में संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रो. गणेश शंकर गिरी ने डा० आशिष फडके का स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उददेश्य एवं योग एवं रेकी के जुडें विभिन्न पक्षों की जानकारी दी। दोनों को एक दूसरे के पूरक बताया।

डा०फडके ने इस रेकी पद्वति के इतिहास को बताते हुए कहा कि यह वास्तव में भारतीय चिकित्सा एवं साधना पद्धति है जो बाद में चीन में अधिक प्रचलित होकर विश्व में विख्यात हो गई।इसकी प्रक्रिया योगसाधना जैसी प्रतीत होती है जिसमें उर्जा को संपूर्ण शरीर में एकाग्रचित्त होकर उस पर ध्यान लगाया जाता है और अपने आप को पहचानने का प्रयास किया जाता है।

इसको योग से काफी निकटता का संबध बताते हुए कहा कि यह पद्धति कई रोगों को जड़ से दूर करने में सहायक है मानसिक एवं आध्यत्मिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी इसका आधुनिक समय में बहुत महत्व है क्योंकि साधक स्वयं या रेकी मास्टर की मदद से उर्जा का संचार कर समस्या का समाधान कर सकता है यह काफी प्रभावशाली पद्धति है। डा०अरूण कुमार साव ने इस कार्यशाला में अपने अनुभव बताते हुए कहा कि उनहें इस पद्धति का अभ्यास कर काफी लाभ पहुंचा है और मन शांत होकर मानसिक समस्याओं का समाधान हुआ है।

इस कार्यक्रम में १५ साधकों ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया और रेकी का प्रथम प्रमाण पत्र प्राप्त किया। धन्यवाद शोधछात्र श्री अंकित शर्मा ने किया । कार्यक्रम में श्री शुभम नेमा, डा०अरूण कुमार साव, श्रीमति श्रद्धा नामदेव, डा० मोहन्ति, राजुल, एकांत, हर्षदेव, कमल शर्मा, शिवानी, बृजेश सिंह, ऋषिमोहन, नवीन कौशिक, मनीष, रंजीत, जयराम, विनोद, विपुल, सुरेन्द्र खरे आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

योगविभागाध्यक्ष